ऑटिज्म बालकों के सम्प्रेषण कौशल एवं व्यवहारात्मक समस्याओं पर संगीत का प्रभाव

संगीत विषय में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु

प्रस्तावित रूपरेखा

शोधकर्त्री

अंजली कुमारी

शोध निर्देशिका

प्रो. लवली शर्मा

संगीत विभाग, कला संकाय

दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा - 282005

2024

भूमिका-

ऑटिज्म एक न्यूरोलोजिकल विकास सम्बन्धी विकार है। यह एक प्रकार की दिव्यांगता है, जो जन्म से या जन्म के उपरान्त भी होता है। यह महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में अधिक होता है। यह उस क्षमता को प्रभावित करता है जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे के साथ कैसे काम और बातचीत करता है और सीखता है। यह ऑटिज्म स्पैक्ट्रम डिसऑर्डर (A.S.D) के नाम से जाना जाता है। ऑटिज्म से पीड़ित बालक सामान्य बालक से अलग सुनते हैं, देखते हैं और महसूस करते हैं। आटिस्टिक बालकों में सामान्यतः यह लक्षण पाये जाते है जैसे- अपने माता-पिता को न पहचानना, अकेले रहना, एक शब्द को बार-बार दोहराना, दूसरे बच्चों में घुलने मिलने से बचना, खुद को चोट पहुँचाने का प्रयास करना, ऑखों मे ऑखे मिलाकर न देखना, संकेतों को न समझना तथा स्वंय में लीन रहना। सामान्यतः ऑटिस्टिक बालकों में ऑटिज्म विकार जीवन के अन्त तक रहता है। यह कोई बीमारी नहीं है बल्कि एक प्रकार का विकार है जिसका अभी तक होम्योपैथी तथा एलोपैथिक में कोई इलाज नहीं हैं। इस प्रकार के लोगों को भविष्य में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है जिसके फलस्वरूप भविष्य में इनका जीवन अत्यधिक दुखदायी हो जाता है। यह सबको अलग अलग रूप में प्रभावित करता है। कुछ ऑटिस्टिक बालकों को सीखने की अक्षमता, मानसिक स्वास्थ समस्याऐं या अन्य स्थितियाँ होती हैं जिसका अर्थ है इन लोगों को विभिन्न प्रकार से सहायता की आवश्यकता होती है। विशेष ढ़ग से सहायता करने पर ऑटिस्टिक बालकों को काफी मदद मिल सकती है।

अनेक शोध कार्यो से यह सिद्व किया जा चुका है कि संगीत ऑटिज्म नामक जैसे विकार से निजात पाने के लिए एक अच्छा माध्यम हो सकता है। संगीत चिकित्सकों ने सम्बन्धित विषयों पर भाँति-भाँति के प्रयोग किये हैं और उनसे ऐसा ज्ञात हुआ है कि संगीत ऑटिस्टिक बालकों और वयस्कों के तनाव और चिन्ता के स्तर को कम कर सकता है और इसके माध्यम से ऑटिस्टिक बालकों के व्यवहार में बदलाव लाया जा सकता है।

साहित्य सर्वेक्षण

क्रम संख्या	विषय	शोधकर्त्री का नाम	विश्वविद्यालय का नाम	वर्ष
1.	Music as an Intervention Procedure in Autism.	Nandi Swagata	University of Calcutta	2017
2.	Rabindra sangeet ushering in hope for the children with Autism.	Sarkar, Averi	Visva Bharti University	2022

3.	The Effect of dance movement therapy on Autism a psychological approach.	Sengupta Mitul	University of Calcutta	2010
4.	Effectiveness of mindfulness meditation in alleviating parenting stress in mothers of children with Autism spectrum this order the differential role.	Bindu	University Bharathiar	2021
5.	The contribution of Indian music to music therapy.	Vidhi Sharma	University of Delhi	2014

अध्ययन की समस्या

ऑटिज्म विकार सामान्यतः ऑटिस्टिक बालकों मे जीवन के प्रारम्भ से लेकर जीवन के अन्त तक रहता है परन्तु इसका सही उपचार करने पर कुछ स्तर तक इनके मानसिक स्वास्थ्य में सुधार लाया जा सकता है ऐसे बालकों को सदैव विशेष सहयोग एवं सहायता की आवश्यकता होती है। सम्प्रेषण कौशल अर्थात परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करने में परेशानी होती है। ऑटिस्टिक बालाकें का व्यवहार सामान्य बालकों की भॉति नहीं होता है जिसके कारण ऐसे बालकों को सामाज से जुड़ने में या आने वाले समय में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

अध्ययन का महत्व

प्रस्तावित शोध में अध्ययन का महत्व इस तथ्य पर आधारित है कि ऑटिज्म जैसे विकार का अभी तक होम्योपैथी में एवं ऐलोपैथिक में कोई उपचार नहीं है परन्तु इसका उपचार कई थैरेपी के द्वारा किया जा रहा है, जैसे-ः ऑक्यूपेशनल थैरेपी, स्पीच थैरेपी, प्ले थैरेपी, विजुअल थैरेपी है। इन सभी थैरेपी के अतिरिक्त म्युजिक थैरेपी द्वारा भी आटिज्म बालकों का उपचार किया जा रहा है एवं म्युजिक थैरेपी से ऑटिस्टिक बालकों पर सकारात्मक परिणाम पाये गये है। यह एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य है जिससे ऑटिस्टिक बालकों के जीवन एवं व्यवहार में सुधार लाया जा सकता है। विश्व में अनेक चिकित्सक हैं जो ऑटिज्म का विभिन्न थैरेपी द्वारा इलाज कर रहे हैं और परिणाम भी सकारात्मक प्राप्त हुए है। यह एक समाज सेवा या जनकल्याण का कार्य हैं। ऑटिस्टिक बालक वे बालक है जिनकी स्थिति अत्यन्त दयनीय है एवं उनके अभिभावकों के व्यवहार पर इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस महत्वपूर्ण कार्य को करना शोधकर्त्री अपना सौभाग्य समझती है।

अध्ययन के उद्देश्य

1 संगीत एवं मनोविज्ञान का अध्ययन करना।

2 थैरेपी के प्रकार का अध्ययन करना।

3 ऑटिज्म के विश्लेषण का अध्ययन करना।

4 संगीत से ऑटिज्म बालकों का उपचार करना।

5 सांगीतिक उपचार के परिणामों का अध्ययन करना।

विषय (ऑटिस्टिक बालक) परिसीमाकंन

प्रस्तुत शोधकार्य को करने के लिए शोधकर्त्री द्वारा आगरा में स्थित पोलेरिस हॉस्पिटल लॉयर्स कॉलोनी में जिसमें 10 विषय होगें जिनकी उम्र 6 से 7 वर्ष के अन्तराल तक होगी और उनमें 40 प्रतिशत लड़कियाँ तथा 60 प्रतिशत लड़के सम्मिलित होगें जिन पर शोधकर्त्री द्वारा कार्य किया जायेगा।

परिकल्पना

1 संगीत का ऑटिज्म विकार से पीड़ित लोगों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

2 संगीत चिकित्सा द्वारा ऑटिज्म स्पैक्ट्रम विकार से मुक्त किया जा सकता है।

3 संगीत के द्वारा ऑटिस्टिक बालकों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन किया जा सकता है।

अध्ययन की कार्यविधि

प्रस्तावित शोध में प्रयोगात्मक विधि, उपचारात्मक विधि, निरीक्षणात्मक विधि, मात्रात्मक विधि तथा सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा एवं चिकित्सकों द्वारा साक्षात्कार के माध्यम से डाटा एकत्रित किया जायेगा।

अध्ययन के स्त्रोत

प्रस्तावित शोध कार्य पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकालयों, लैपटॉप, मोबाईल, इन्टरनेट, कम्प्यूटर आदि उपकरणें द्वारा किया जायेगा।

शोध प्रबन्ध को अध्यायों का प्रस्तावित विभाजन

1 संगीत एवं मनोविज्ञान

2 थैरेपी के प्रकार

3 ऑटिज्म का विश्लेषण

4 संगीत से ऑटिज्म बालकों का उपचार

5 सांगीतिक उपचार के परिणाम

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 डॉ. किरन तिवारी, संगीत एवं मनोविज्ञान, कनिष्क पब्लिशर्स (1997)

2 सिकन्दर कृष्ण कुमार, संगीत का चिकित्सीय, हिन्दुस्तान दैनिक (1997)

3 मनोज भार्गव, ऑटिज्म, आत्मकेंदित, K.D.P., 2 संस्करण (2019) स्वालीनता

4 प्रो. (डॉ.) लवली शर्मा, म्युजिक थैरेपी टुडे, संजय प्रकाशन (2009)

5 रेबेका रेदरफोर्ड, चाइल्ट ऑटिज्म एण्ड, इण्डपेन्डेन्टली पब्लिशर्स म्युजिक थैरेपी, (2020)

6 डॉ. महारानी शर्मा, संगीत-चिकित्सा, कनिष्का पब्लिशर्स (2022)

7 सतीश वर्मा, संगीत-चिकित्सा, राधा पब्लिकेशन दिल्ली (2004)

बेबसाइट-ः

https://www.autismindia.com

https://www.thehindu.com

https://www.thenaitonaltrust.com

https://www.specialeducationnotes.com

https://www.thealthsite.com